विजयदांन देथा की बातों में राजस्थानी–जनजीवन की झांकी

*डॉ. गोकुल चन्द सैनी

वीर भूमि राजस्थान और उसकी प्रजा के जीवन की वास्तविकझांकी अगर हमें देखनी हो तो बात साहित्य की शरण में जाना पडेगा।चूंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है अतएव राजस्थानी निवासियोंको सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थिति का दर्पण बातसाहित्य ही है। इस दर्पण में हम यहां के निवासियों के रहन–सहन, वेश–भूषा, खान–पान, उत्सव त्यौहार आदि का प्रतिबिंब भली–भांतिनिहार सकते हैं। लोक साहित्य ही एक ऐसा साहित्य है जिसमेंसंकृति का सच्चा तथा स्वाभाविक चित्रण उपलब्ध होता है। लोक जीवन के वास्तविक स्वरूप को देखने को लिए हमें इसी साहित्य का अनुसंधान करना होगा। ग्रामीण बात लेखकों ने समाज में जिस समता का अनुभव किया है उसका उसी रूप में चित्रांकन भी किया है।

व्यक्ति की मृत्यु के उपरान्त भी यहां पर कई प्रकार के रीति–रिवाज प्रचलित हैं। दाह संस्कार के अवसर पर बैकुंठी (शव को पालकी में बिठा कर निकाले जाने वाली शोभायात्रा) निकालने की परम्परा है। इसका उदाहरण देथा जी की 'खटकरम' कहानी में देखा जा सकता है– "पंडित के सुरसुरी छोड़ने से ठकुरानी ने बैकुठी का हठ किया तो ठाकुर की हैसियत माफिक ठाठ से बैकुठी निकली।निछरावलों के लिये बस्ती के याचकों और कमीन कारूओं ने बहुत अहसान माना। हिस्से अनुसार बांट कर खाये बिना पंडित को अकेले कौन हड़पने देता। बैकुंठी के कायदे से चंदन की लकड़ियों और घी–नारियल से ठाकुर का दाह–संस्कार हुआ तब तक पंडित के आंसू नहीं सूखे। लोक–दिखावे के लिए हंसना मुश्किल है, पर रोना आसान है।1 इसके बाद ग्यारहवें व बारहवें दिन मिष्ठान का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोगों को जिमाया जाता है। पन्द्रहवें दिन पंडित को घर बुलाकर घर का शुद्धीकरण करवाया जाता है। इस प्रकार मृत्यु सम्बन्धी रीति–रिवाज भी यहां पर काफी समय से प्रचलित रहे हैं।

देथा जी की इन बातों में यहां के सामाजिक पारिवारिक और सांस्कृतिक जीवन का सजीव रूप प्रतिबिम्बित है। राजस्थान के लोकजीवन में सादगी, सरलता और आमोद–प्रमोद के साथ सरसता पूर्णरूपेण दर्शनीय है। इन बातों में व्यक्त साधारण गृहस्थ का जीवन आत्मतुष्टि का व्यंजक प्रतीत होता है। सम्मिलित परिवार की प्रथा, जीवन की आवश्यकताओं की सीमित परिधि, बुद्धिवादिता का अभाव इस जीवन को सुखी और स्पृहणीय बनाए हुए है। इनकी बातों में यहां का लोकजीवन कुछ सामाजिक और पारिवारिक कुरितियों एवं समस्याओं से ग्रसित होते हुए भी सुखी और सम्पन्न व्यंजित हुआ है। इसका उदाहरण 'आशा अमरधन' कहानी में देखने को मिलता है। जैसे– "उस गरीब किसान की पत्नी अपने दुधमँहे दो बच्चों को छोड़कर जब इस संसार से विदा हो गईं तब उस किसान के रिश्तेदार उसका नाता करवा देते हैं। सौंतेली माँ बच्चों पर बहुत अत्याचार करती हैं। पत्नी के कहने पर गरीब किसान पत्नी के साथ दोनों बच्चों को रोता हुआ छोड़कर प्रदेश में कमाने चला जाता है, तब भी दोनों पति–पत्नी राजी–खुशी है।2

समाज में रूढ़ियों व परम्पराओं का स्थान महत्वपूर्ण होता है। लोकजीवन में पग–पग पर रूढ़ियों व परम्पराओं से साक्षात्कार होता है। रूढ़ियों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। अनेक जनरीतियां कालातीत होकर

रुढ़ियों का स्वरूप ग्रहण कर समाज में व्यवहत होने लगती हैं। जैसे–व्यावहारिक जीवन की आसन्न विवशताओं से जकड़े अधिकांश व्यक्ति चाहे वे गांवों में बसे हों या शहरों में, बढ़ती सम्पन्नता के परिणामस्वरूप पुरखों की मृत्यु पर बामन–पण्डितों को दान–दक्षिणा देने में किसी प्रकार की कोताही नहीं बरतते, बल्कि उसमें दिनों दिन इजाफा करते जा रहे हैं। पर लोक साहित्य में कहावतों, गीतों, दृष्टान्तों व लोक कथाओं में जमकर जड़ रूढ़ियों का प्रतिरोध होता रहा है। 'चौधराइन की चतुराई' संग्रही की 'वैतरणी', 'खटकरम' और 'मेहनतसार' इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। "मृत्यु के बाद सद्गति के निमित्त वैतरणी पार करने में चौधरी बाबा को असह्य व्यवधान उपस्थित होने लगे तो अन्तिम श्वास गले व आखों में अटक कर रह गया। बामन के हथकण्डे बगुली गाय को हथियाने में पूर्णतया शास्त्र–सम्मत थे। पर बहू और बेटे के लिए मन–गढ़न्त वैतरणी की काल्पनिक यातनाओं से कहीं अधिक अपने बच्चों को पुष्ट बनाने की खातिर बगुली गाय का दूध अपरिहार्य था। फिर भी वज्र–संस्कारों के वशीभूत बाबा के आद्रकण्ठ से जब दारूण व्यथा प्रकट हुई तो बेटे को मजबूरन अपनी ईच्छा के विरुद्ध गऊ–दान करना पड़ा। घातक रुढ़ियों की अनुपालना के परिणाम स्वरूप दूध–मुँहे बच्चों को दूध से वंचित होना पड़ा। और उधर मानवीय संवेदना से रिक्त पण्डित के बच्चे धारोष्ण दूध का स्वाद लेने लगे।बाबा की बहू और बेटे को सपनों में बगुली का रम्भाना और गोवणी में धाराओं की अनगूज सुनाई पड़ने लगी, पर सपनों में दिखे दूध की तलैया से बच्चों के होंठो का परस भी मुमकिन नहीं था। लोह श्रंखला की कड़ियों को तोड़ना आसान है, पर रुढ़ियों के अदृष्ट धागे तो अटूट होते हैं।

बहू ने पण्डितजी के घर अपनी बगुली गैया को खूँटे से बंधी देखी तो उसे यकायक भरोसा नहीं हुआ उसकी पूँछ के सहारे वैतरणी पार करके बाबा तो स्वर्ग की मौज मना रहे हैं, पर रम्भाने की चिर–परिचित आवाज सुनकर उसकी भ्रान्ति दूर हो गई। उसने डरते–डरते पति से चर्चा को तो उसकी आँखों से रूढ़ियों का अभेद्य अंधियारा छँट गया। फिर कैसी ढ़ील, कैसा लिहाज? वह आक्रोश में बौराया–सा पण्डित के घर गया और बछिया सहित अपनी 'बगुली' ले आया।3 रुढ़ियों के दाव–पेंच बामन की नम आँखों से टुकुर–टुकुर ताकते रहे और अन्ध–विश्वासों से जकड़े बेटे को सच्चाई का बोध हुआ तो उसने अपने अधिकार का बेधड़क उपयोग किया। अन्ध–विश्वासों के रणक्षेत्र में उसकी विजय हुई, जो सामन्ती युद्धों की यशस्वी जीत से कही ज्यादा कल्याणकारी व महत्वपूर्ण हैं। सुदृढ़ संस्कारों को जीतना वास्तविक रणभूमि की लड़ाइयों से ज्यादा कठिन है। चेतना के धरातल पर यथार्थ जीवन में भले ही जड़–रूढ़ियों के नाग–पाश लोगों को जकड़े रहें पर सामूहिक अवचेतन के अगम्य लोक में उन्होंने सदैव डंके की चोट मुक्ति का वरण किया है, वहाँ कोई दुविधा नहीं।

गांवों के अनगिनत किसान, खेतिहर मजदूर, असहाय नारी और अनुसूचित जाति के निरीह लोग जो दासता की लोह श्रंखलाओं में बुरी तरह जकड़े हुए थे। उनके सम्बन्ध में देथा जी ने खूब लिखा है। एक जगह उन्होंने स्वीकार भी किया है–मैं स्वयं इसी शोषित वर्ग का यशगान करने वाला चारण हूँ, जिसने अपने पुरखों की परम्परागत लीक से हटकर शोषित किसान व दलित वर्ग की प्रशस्ति में अपनी लेखनी का सार्थक उपयोग किया है।

देथा जी की बातों में उच्च वर्ग का चित्रण किया गया है। जिनमे राजा–ठाकुरों, बोहरों व ब्राह्मणों की सम्मिलित शक्ति व आतंक के सामने निम्न वर्ग–मजदूर–किसान को नारकीय जीवन बिताने के लिए मजबूर होना पड़ता है। समाज के हर क्षेत्र में निम्न वर्ग के साथ भेद–भाव किया जाता था। जमीनें इनके पास थी नहीं, जिनके पास जमीन थीं, उस पर खेती करने के लिए राजा या ठाकुरों को कर दिया जाता था। राजनीति में इनका कोई अस्तित्व था नहीं राजा जो भी कोई आदेश देता था, उनकी पालना करना निम्न वर्ग के लिए अनिवार्य था। जो भी कोई उनकी आज्ञा का उल्लंघन करता, उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। इस प्रकार देथा जी ने समाज के निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति को अपनी बातों में खुलेआम प्रस्तुत किया है। 'चौधराइन की चतुराई' कहानी संग्रह में उनकी 'वैतरणी', 'बनिये का गुरू', 'मेहनतसार', 'बाजरा लेगा या आटा''बाड़े की मर्यादा', 'मौके की सूझ', 'सातों को गटकाय

जाऊ', 'ठाकुर का भूत' तथा 'गोगे की मिठाई' आदि कहानियां इस स्थिति की ओर संकेत करती हैं। बैतरणी कहानी में निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति को देथा जी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है, जैसे– "एक था किसान। गाँव से थोड़ी दूर वह एक ढ़ाणी में रहता है। पीढ़ियों से खेती–बाड़ी का धन्धा। पर इस भरोसे के धंधे में कोई खास बरकत नहीं हुई। जैसे – तैसे गाड़ी घिसट रही थी। पेट में गांठें और गले में फंदा। खेत खलिहान के झंझट से मौत के अलावा कभी मुक्ति नहीं मिलती थी। इसलिए रामनाम और भजनभाव में मन लगाना पड़ता था।4

कहानी, कहानीकार और कहानी लिखने के लिए उत्प्रेरित करने वाली स्थितियों के सम्बन्ध में हिन्दी कथाकार कमलेश्वर की टिप्पणी एक बेबाक सच्चाई का बयान करती है। वे कहते हैं – कहानी लिखना लेखक के लिए यातना नहीं है। यातनापूर्ण वे कारण जो लेखक को कहानी लिखने के लिए मजबूर करते है ..... और यह मजबूरी तभी होती है जब लेखक का अपना संकट दूसरों की संवेदना से मिलकर अनात्म हो जाता है।5 कथाकार की लोक सम्बद्धता यही है कि वह समाज में जो घट रहा है, उसका यथार्थपूर्ण अंकन करता रहे।

जिस लोक या समाज की बात कथाकार करता है, उसके सामाजिक स्तरों को उसे सबसे पहले पहचानना होता है। विश्व के लगभग सभी समाजों में, या कहे, लोक जीवन में विभिन्न वर्ग पाए जाते हैं। वर्ग सिद्धांत के आधार पर कार्ल मार्क्स ने बुर्जुआ, सर्वहारा तथा पेटी बुर्जआ जैसे तीन वर्गों की कल्पना की थी। "वर्ग का महत्व व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए रहा है वर्ग ही यह निश्चित करता है कि जीवन में विभिन्न स्थितियों को प्राप्त करने के लिए कितने अवसर उपलब्ध हैं। इतना ही नहीं समाजीकरण व व्यक्तित्व का विकास भी वर्ग की उपसंस्कृति के आधार पर होता है। वर्ग की सदस्यता उत्तरदायित्वों व विशेषाधिकारों के क्षेत्र पर निर्धारित होती है। जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से कितना समायोजन करना है, यह वर्ग संस्कृति निर्धारित करती है।6 प्रत्येक समाज में वर्ग की भिन्नता होने के कारण उनमें संघर्ष की स्थितियां बनी रहती है। वर्ग वैषम्य के कारण समाज में पोषण एक उत्पीडन की स्थिति होती है। वर्ग वैषम्य के ही कारण वर्ग चेतना का उदय होता है और फिर संघर्ष की शुरूआत होती है। शोषित वर्ग के लिए जब कुव्यवस्था की स्थिति असहनीय हो जाती है तो वह उस स्थिति से मुक्ति के लिए संघर्ष का रास्ता अपना लेता है।

देथा जी की 'बनिये का गुरू' कहानी में चौधरी–बाबा को एक धूर्त बनिया शब्दों की वचनबद्धता में फँसा कर लडकियों के साथ–साथ उनकी बैल–गाड़ी तक रखवा लेता है। तब पांव घसीटते हुए बाबा अपने घर लौटता है। आप–बीती सुनाते समय बनिये की मनमानी पर क्षुब्ध होता है। एक उदाहरण इस प्रकार है–

"सेठ ने पूछा, 'बाबा गाड़ी का क्या लेगा' चौधरी ने कहा 'एक ही दाम बता दूं ? पूरे पांच रूपये लूंगा। कमी–बेशी मत करना सेठ ने कहा, 'बाबा तूने कहा है तो पूरे पांच ही दूंगा। चल जल्दी कर। मेरी हवेली दूर है।

सेठ के साथ चौधरी उसकी हवेली गया। गाड़ी खाली की। सेठ ने खुशी–खुशी पांच रूपये दिये। चौधरी वापस बैल जोतने लगा तो सेठ गरजा, खबरदार, गाड़ी और बैलों के हाथ मत लगाना।गाडी–बैलों की मैंने पूरी कीमत चुकाई है। अब ये मेरे हैं। मेंने तुझ से गाड़ी का मोल पूछा था या लकड़ियों का? मैंने कहा था कि बाबा,गाड़ी का क्या लेगा? कहा था कि नहीं? तू ने पांच रूपये मांगे। पांच से कम दिये हों तो बता? गाड़ी का मोल करते वख्त बैल जुत थे कि नहीं? सर में सफेदी आ गयी, सच बोलना। एक दिन सबको भगवान को मुंह दिखाना है।

चौधरी को काटो तो खून नहीं। अटकते–अटकते बोला, 'बैल जुते हुए जरुर थे, पर सेठजी मैं ने तो लकड़ियों का दाम बताया था।गाड़ी–बैल कहीं पांच रूपये में आते हैं।

सेठ ने तेजी से कहा, 'पर मैं ने तो गाड़ी का दाम पूछा था और गाड़ी के दाम देने की बात की थी।

गाड़ी–बैल पांच रूपये में आते हैं कि नहीं यह तू जाने। आदमी की जबान एक होती है कि दो? अब चुपचाप चलता बन, नहीं तो धक्के मार कर निकलवा दूंगा। मेरे यहां झगड़ा–टंटा नहीं चलेगा।7 इसके अलावा भी बांता री फुलवाड़ी की कई बातें वर्ग भेद की भावना से अनुप्रेरित दिखाई देती हैं. जिनमें 'उजाले के मुसाहिब', 'आशा अमरधन', 'जंजाल', 'दिवाले की बपौती' समाधान, अपनी–अपनी खोज', 'दूजौ कबीर', 'बेदाग चिकनाहट' 'रिआअत', 'खोजी', 'खीरवाला राज्य' और 'आसीस' प्रमुख हैं।

***व्याख्याता– हिन्दी**
स्वामी विवेकानन्द राजकीय महाविद्यालय, खेतड़ी

संदर्भ

1. चौधराइन की चतुराई : विजयदांन देथां, खटकरम कहानी,पृष्ठ––26
2. उजाले के मुसाहिब : विजयदांन देथा, कहानी आशा अमरधन
3. चौधराइन की चतुराई : विजयदांन देथा, मुखडा, पृष्ठ–8, 9
4. चौधराइन की चतुराई : विजयदान देथा, वैतरणी कहानी, पृष्ठ–17
5 नई कहानी की भूमिका : कमलेश्वर, पृष्ठ–74
6 समाज शास्त्र विवेचन : नरेन्द्र कुमार सिंधी, वयुधादः गोस्वामी, पृष्ठ–166
7. चौघराइन की चतुराई : विजयदांन देथा – पृष्ठ–35